International Journal of Arts & Education Research

'धर्म' व 'मोक्ष' की सिद्धि का उपाय 'अर्थ' व 'काम'

प्रवीन कुमार*[1]

[1]शोध छात्र, साईं नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

सार

देव संस्औति का एक-एक पक्ष इतना सर्वांगपूर्ण है कि देखकर आश्चर्य होता है कि वैदिककालीन ऋषिगणों ने मानव मात्र के अभ्युदय- लौकिक व पारलौकिक प्रगति के एक भी पहलू को अछूता नहीं छोड़ा है। धर्माचरण व उसके लिए व्यक्ति का अन्तर्मुखी होकर परिष्औत संवदेनशील जीवन जीना ऋषियों ने अनिवार्य बताया है। ब्राह्मणत्व की यह सिद्धि व्यक्ति को ब्रह्मनिष्ठ बनाती हुई उसकी निज की प्रगति के साथ-साथ सबके उत्थान का पथ प्रशस्त करती है। भारतीय संस्औति के प्रणेता मनीषी कहते हैं कि 'अर्थ' व 'काम' दोनों का ही उपार्जन- उपभोग करो, पर प्रमाण से सँभलकर, 'धर्म' के साथ युक्त होकर। अध्यात्मवादी भौतिकता का समर्थन करने वाली भारतीय संस्औति कहती है जिस 'अर्थ' के अनुष्ठान से 'धर्म' व 'काम' का उद्ध्रास हो जाए व जिस 'काम' को संपादन से 'धर्म' व 'अर्थ' में बाधा पड़े ऐसा पुरूषार्थ सम्पन्न न किया जाए। 'अर्थ' व 'काम' को ऋषियों ने दोनों ओर 'धर्म' और 'मोक्ष' से बाँध दिया है। कामशास्त्र के उपदेष्टा महर्षि वात्सायन ''कामसूत्र'' में लिखते हैं-

"लोकयात्राया हस्तगतस्य च बीजस्य भविष्यतः

सस्यस्यार्थे त्याग दर्शनाच्चरेद्धर्मान।"

अर्थात् "जैसे हाथ में आए हुए अन्न (बीज) को भविष्य में होने वाले बहुत से अनाज के लोभ से त्याग दिया जाता है (अर्थात् जमीन में बो दिया जाता है) उसी प्रकार 'मोक्ष' के लिए 'अर्थ' और काम को संकुचित करके भी, 'धर्म' का सेवन करना चाहिए।"

IJAER

*Corresponding Author